Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852
Received: 28-04-2022, Accepted: 13-05-2022, Published: 30-05-2022
Volume 3, Issue 1, 2022, Page No. 18-21

पर्यावरण–प्रदूषण के समाधान में 'यज्ञ' का योगदान

विद्याधर सिंह
सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू, भारत

सारांश
पर्यावरण–प्रदूषण की समस्या आज विश्वपटल पर एक ज्वलन्त समस्या के रूप में उभरी है और इसमें सुधार लाना सारी मानव–जाति के लिए बहुत बड़ी चुनौती है। पर्यावरण, एक व्यापक शब्द है, जिसमें वे सभी शक्तियाँ, परिस्थितियाँ एवं वस्तुएँ सम्मिलित हैं, जो सम्पूर्ण जगत् को परावृत करती हैं। ये सारी शक्तियाँ, परिस्थितियाँ और वस्तुएँ हमारे क्रियाकलापों को प्रभावित करती हैं, उनके लिए एक परिधि सुनिश्चित करती हैं। यह परिधि व्यक्ति, ग्राम, नगर, प्रदेश, महाद्वीप, विश्व और सम्पूर्ण सौरमण्डल या ब्रह्माण्ड हो सकता है। इस प्रकार हमारे चारों ओर जो विराट् प्राकृतिक परिवेश या दायरा है, उसे ही हम पर्यावरण कहते हैं। मनुष्य जब इन प्राकृतिक शक्तियों या घटकों में हस्तक्षेप करता है, तो किसी एक घटक या तत्त्व की मात्रा एक निश्चित मानक से कम या अधिक हो जाती है, तो प्रकृति में असन्तुलन आ जाता है। इस असन्तुलन को ही प्रदूषण कहा जाता है।

मूल शब्दः पर्यावरण–प्रदूषण, समाधान, यज्ञ, विश्व

प्रस्तावना
प्रकृति मानव की रक्षक है, वही मानव को पालती है, बड़ा करती है, उसे पुत्रवत् प्रेम करती है। अथर्ववेद में कहा गया है – 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः'[1] अर्थात् यह भूमि मेरी माता है और मैं इसका पुत्र हूँ, लेकिन आधुनिक मानव हवा, पानी, वनस्पति, फल–फूल और भूमि को अपने स्वार्थ के लिए प्रदूषित कर रहा है। वह स्वयं को जितना बुद्धिमान् समझ रहा है, उतना ही अपनी बुद्धिमत्ता का उपयोग पर्यावरण को दूषित करने के लिए कर रहा है। यज्ञ इस प्रदूषित वातावरण को शुद्ध करने अत्यन्त सहायक हो सकता है, यही इस शोधपत्र का प्रतिपाद्य है, परन्तु इससे पूर्व बढ़ते पर्यावरण प्रदूषण के कारणों पर संक्षिप्त दृष्टि डालना आवश्यक है।

पर्यावरण–प्रदूषण के कारण
आज पृथ्वी, जल, वायु, आकाश आदि सब कुछ प्रदूषित हो चुके हैं, जो कि मानव–जीवन की अनिवार्य आवश्यकताएँ हैं। जल–स्रोत प्रदूषित हो चुके हैं, वायुमण्डल में कार्बन डाइ ऑक्साइड (CO_2) की मात्रा बढ़ गई है, पृथ्वी की उर्वरा शक्ति धीरे–धीरे कम हो रही है। कहीं पर असमय भारी वृष्टि हो रही है, तो कहीं सूखा का भयंकर ताण्डव हो रहा है। धरती का तापमान बढ़ रहा है, ग्लेसियर पिघल रहे हैं, आर्कटिक समुद्र की बर्फ कम हो रही है, समुद्र गर्म हो रहा है तथा उसका जलस्तर भी बढ़ रहा है। कोरोफ्लोरो कार्बन (CFCs), के कारण ओजोन वायु अन्तरिक्ष में कम हो रही है। इसके लिए प्रमुख रूप से वे औद्योगिक देश उत्तरदायी हैं, जहाँ पर उद्योगों के कारण कार्बन डाइ ऑक्साइड (CO_2), मीथेन (CH_4), कार्बन मोनॉक्साइड (CO) तथा सल्फर डाइ ऑक्साइड (SO_2) जैसी विषैली गैसों का उत्सर्जन हो रहा है। भारत में हजारों कल–कारखानों, मशीनों, औद्योगिक यन्त्रों से लगभग 120 लाख टन कार्बन डाइ ऑक्साइड शुद्ध वायुमण्डल में छोड़ी जाती है।
पृथ्वी पर पर्यावरण–प्रदूषण का सबसे बड़ा कारण जन–संख्या वृद्धि को माना जा रहा है। मानवीय आव यकताओं की पूर्ति के लिए जंगल कटते जा रहे हैं। ग्रामों तथा नगरों के विकास होते जा रहा है। वनस्पति, औषधि तथा वृक्षों के संहार से पृथ्वी का वातावरण बिगड़ते जा रहा है। मनुष्य प्राकृतिक संसाधनों को तिलांजली देकर नये यान्त्रिक उपकरणों का प्रयोग कर रहा है। इसके साथ ही प्रतिदिन वाहनों की बढ़ती संख्या और उनसे निकलने वाले धुँओं तथा अन्य कार्बन डाइ ऑक्साइड को बढ़ाने वाली पदार्थों से प्रदूषण में निरन्तर वृद्धि हो रही है। दस लाख लोगों की संख्या वाले नगर में प्रतिदिन दो लाख मैट्रिक टन कूड़ा–करकट, पाँच लाख टन नाली का दूषित पानी तथा 910 मैट्रिक टन दूषित हवा वायुमण्डल में छोड़ी जाती है। इस प्रकार हमारा पर्यावरण असन्तुलित हो गया है।
पर्यावरण को बिगाड़ने वाले कारणों में – राष्ट्रों में परस्पर युद्धोन्माद भी है। ये युद्ध चार–चार, छः–छः महीने तथा वर्षों तक भी चलने वाले होते हैं, जिसमें बहुत अधिक मात्रा में बारूद छोड़ा जाता है। ये वायुमण्डल को दूषित कर सम्पूर्ण पर्यावरण जगत् को हानि पहुँचाते हैं। इससे पूर्व होने वाले युद्धाभ्यास तथा परीक्षणों में बारूद या अन्य विषैली गैसों से जो प्रदूषण फैलता है, वह अत्यन्त भयानक है। यह प्राणियों को नष्ट कर देता है या अपाहिज कर देता है। इसका दुष्प्रभाव जीव–जगत् पर ही नहीं, अपितु जड़ जगत् पर भी पड़ता है। इस प्रकार देखा जाय तो आज हमारा पर्यावरण बहुत प्रदूषित हो चुका है। वेद कहता है – जैसे मित्र, अन्य सभी सम्बन्धियों से निकट होता है, वैसे ही वायु, प्राणियों के सबसे निकट होने के साथ–साथ अनिवार्य पदार्थ है।[2]
पर्यावरण चाहे बाह्य हो या आन्तरिक, इसके घटक तत्त्व प४चमहाभूत ही हैं। पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश ये पाँच तत्त्व पर्यावरण के आधार हैं। इनके दूषित होने पर पर्यावरण दूषित होगा और शुद्ध होने पर पर्यावरण भी शुद्ध होगा। अब

प्रश्न यह है कि ऐसी भयावह स्थिति से कैसे बचा जाय। उद्योग–धन्धे, कल–कारखाने तो अब बन्द नहीं हो सकते। युद्ध के अभ्यास भी नहीं रोके जा सकते, क्योंकि हर देश को दूसरे देश से हर समय भय बना रहता है। मिसाईल परीक्षण, परमाणु विस्फोट भी इस का ही एक अंग है।

आज का विज्ञान कीटना ाक द्रव्यों और अन्य रासायनिक पदार्थों से पर्यावरण की रक्षा करना चाहता है, परन्तु यह एकाङ्गी है। गम्भीरता से विचार किया जाय तो हम इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि पर्यावरण की अ ाुद्धता बुद्धिमान् मनुष्य की बौद्धिक उपज है। अतः इसकी शुद्धि केवल वायुमण्डल में या जल और भूमि में औषधियों के छिड़काव से नहीं होगी, अपितु उसी के साथ मन, बुद्धि और आत्मा को भी शुद्ध करने के उपाय करने होंगे, क्योंकि मन भी तो भौतिक ही है तथा शरीर की भाँति यह भी इन तत्त्वों से मिलकर बना है। अतः इसे यज्ञ या अग्निहोत्र से दूर किया जा सकता है। अन्य शब्दों में पर्यावरण–प्रदूषण की समस्या से छुटकारा पाने के लिए सबसे कारगर उपाय 'हवन' है। वेद में कहता है – घृतेन द्यावापृथिवी पूर्येथाम्।[3] घृतेन द्यावापृथिवी प्रार्णुवाथाम्।[4] अर्थात् यज्ञ के द्वारा द्युलोक और पृथिवी को भर दो। वेद में एक प्रश्न किया गया है – 'प्रच्छामि यत्र भुवनस्य नाभिः'[5] अर्थात् इस विश्व का बन्धन या आधार क्या है? इसका उत्तर देते हुए कहा गया है – 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः'[6] अर्थात् यज्ञ समस्त विश्व की नाभि अर्थात् केन्द्र है। ऋग्वेद[7] और अथर्ववेद[8] में भी यही बात कही गई है। जिस प्रकार हमारे शरीर में नाभि का महत्त्वपूर्ण स्थान है, ठीक उसी तरह विश्व में यज्ञ का स्थान है। नाभि की स्थिति शरीर के मध्य में है और पूरा शरीर इस पर निर्भर करता है। नाभि के ठीक रहने पर शरीर भी ठीक रहता है। जैसे शिशु जन्म से पहले नाभि के माध्यम से माँ से जुड़कर रस प्राप्त करता है, उसी के माध्यम से वह जीवित रहता है, उसी प्रकार संसार भी यज्ञ से जुड़कर जीवन प्राप्त करता है। यज्ञ जगत् का आधार है, संसार का पोषक है, प्राणदाता है। अतः शास्त्रकारों ने कहा है – यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म[9], यज्ञो हि श्रेष्ठतमं कर्म।[10]

यज्ञ से वायु की दुर्गन्ध नष्ट होकर सुगन्धि फैलती है। वेद यज्ञ को वायु–शुद्धि का हेतु मानता है। यजुर्वेद में कहा गया है – 'वसोः पवित्रमसि' शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्।'[11] अर्थात् यज्ञ असंख्यात संसार एवं अनेक प्रकार के ब्रह्माण्ड को धारण करने वाला तथा शुद्धि करने वाला कर्म है।[12] ऋषि दयानन्द ने यज्ञ को वायु–शुद्धि का सर्वोत्तम साधन माना है। वे लिखते हैं –जैसी यज्ञ के अनुष्ठान से वायु और वृष्टिजल की उत्तम शुद्धि और पुष्टि होती है, वैसी दूसरे उपाय से कभी नहीं हो सकती।[13] यज्ञ न केवल वायु की दुर्गन्ध को नष्ट करता है, अपितु इसे शुद्धकर रोगों से रक्षा भी करता है। अतः उन्होंने कहा है कि "दुर्गन्धयुक्त वायु और जल से रोग, रोग से प्राणियों को दुःख और सुगन्धित वायु तथा जल से आरोग्य और रोग के नष्ट होने से सुख प्राप्त होता है।[14] यज्ञाग्नि में जो भी स्थूल पदार्थ डाले जाते हैं, उसे अग्नि अपने स्वभावानुसार सूक्ष्म पदार्थ में बदल देती है। साधारण लोग इसे नष्ट करना समझते हैं, परन्तु पदार्थ कभी नष्ट नहीं होता अपितु उसका रूप परिवर्तित हो जाता है। यज्ञ में जो अनेक प्रकार की औषधियाँ डाली जाती हैं वे सूक्ष्म होकर तीन स्थानों – पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्युलोक में जाती हैं और प्रभाव दिखाती हैं।

घृतादि ये पदार्थ सूक्ष्म होकर वायुमण्डल में मिश्रित होकर आरोग्य प्रदान करते हैं। यजुर्वेद का ऋषि कहता है –

हविष्मतीरिमाऽआपो हविष्मा२ऽआ विवासति।
हविस्माँ देवोऽध्वरो हविष्माँ२ऽअस्तु सूर्यः।।[15]

इसमें यज्ञ करने का निर्देश देते हुए कहा गया है कि यज्ञ से पृथ्वी, अन्तरिक्ष, द्युलोक, जल और औषधियाँ आदि हवि से युक्त होकर अनेक प्रकार के सुख देने वाले, उपकारक एवं लाभदायक होते हैं।

वसोः पवित्रमसि द्यौरसि पृथिव्यसि मातरि वनो घर्मोऽसि विश्वधाऽसि।
परमेण धाम्ना दृँहस्व मा ह्वार्मा ते यज्ञपतिर्ह्वार्षीत्।।[16]

इस मन्त्र में पवित्रमय एवं सुखदायक यज्ञ को पृथ्वी तथा देश–देशान्तरों में फैलकर प्राणी जगत् को आरोग्य और सुख देने वाला कहा गया है। इससे स्पष्ट है कि यज्ञ प्राणी जगत् और पर्यावरण को सुखकारक बनाने वाला साधन है। यज्ञ न केवल पर्यावरण या वायुमण्डल को सुगन्धित करता है, अपितु वह वायुमण्डल की दुर्गन्ध को भी नष्ट करके उसे अशुद्धियों तथा विषों से रहित भी करता है। इस प्रकार विषाक्त वायुमण्डल का विष भी गोघृत के द्वारा यज्ञ–हवन करने से सरलता से नष्ट हो जाता है।[17] गाय का घी विषनाशक है। इससे सब प्रकार के विषों को दूर किया जा सकता है। फ्राँस के वैज्ञानिक प्रो. ट्रिलवर्ट का कथन है कि जलती हुई शक्कर में वायु को शुद्ध करने की इतनी शक्ति है कि इससे चेचक, हैजा तथा यक्ष्मा जैसी बीमारियाँ नष्ट हो सकती हैं। हैफ्फिन के अनुसार घी के जलने से कई रोगों के जन्तु घृतकणों के सम्पर्क से नष्ट हो जाते हैं।[18] डॉ.स्वामी सत्यप्रकाश ने यज्ञ पर अनुसन्धान कर निष्कर्ष निकाला है कि सामग्री और घृत के परमाणुओं से फोरमेल्डिहाईड गैस उत्पन्न होती है, जो वायुमण्डल में फैलकर रोगोत्पादक कीटाणुओं को नष्ट कर देती है।[19]

यज्ञ में हविर्द्रव्य के लिए चार प्रकार के पदार्थों का विधान मिलता है –
प्रथम – सुगन्धित : कस्तूरी, केसर, अगर, तगर, श्वेत चन्दन, इलाचयी, जायफल, जावित्री आदि।
द्वितीय – पुष्टिकारक : घृत, दूध, फल, कन्द, अन्न, चावल, गेहूँ, उड़द आदि।
तृतीय – मिष्टः शक्कर, शहद, छुहारे, दाख आदि।
चतुर्थ – रोगनाशक : सोमलता अर्थात् गिलोय आदि औषधियाँ।[20]

यज्ञाग्नि में दी गई हवि विशेष रूप से दो स्थानों – भूमि और अन्तरिक्ष में कार्य करती है। यज्ञ में दी गई हव्य–सामग्री भूमि पर मनुष्य और अन्य प्राणियों के श्वास–प्रश्वास के द्वारा फेफड़ों में पहुँचती है और वहाँ रक्त के साथ मिलकर हृदय तथा अन्य आन्तरिक अंगों में जाकर उन्हें सक्रिय करती है। इस सन्दर्भ में यह अवधारणीय है कि जो औषधि जितनी सूक्ष्म होती है, उसका प्रभाव शरीर पर उतनी ही तीव्रता के साथ होता है। यज्ञ में यही प्रक्रिया अपनायी जाती है। स्थूल

वनस्पति और औषधियों को अग्नि में आहुति रूप में देकर उनके गुणों को कई गुणा बढ़ाया जाता है और उसे अन्तरिक्ष में या वायुमण्डल में पहुँचाया जाता है और जब मनुष्य एवं अन्य प्राणी श्वास–प्रश्वास द्वारा ग्रहण करते हैं, तो उन सूक्ष्म औषधियों के परमाणु शरीर के रक्ताभिसरण के साथ विभिन्न अंगों पर अपना प्रभाव डालते हैं, जिससे रोग–निवृत्ति और स्वास्थ्य लाभ मिलता है।

यज्ञ प्राणि–जगत् का रोग–निवारण करने के साथ ही वनस्पति–जगत् के लिए उपयोगी वर्षा में सहायक है। अतः वेद में यज्ञ को 'वर्षवृद्धम्' – वर्षा को बढ़ाने वाला कहा गया है।[21] आचार्य मनु कहते हैं – अग्नि में दी गई आहुति सूर्यमण्डल में पहुँचती है, उससे बादल बनते हैं, वर्षा होती है, उससे अन्न की उत्पत्ति होती है, जिससे प्रजाओं का जीवन चलता है।[22] शतपथ ब्राह्मण के ऋषि ने भी कहा है – अग्नेर्वै धूमो जायते धूमादभ्रमभ्राद् वृष्टिः ...।[23] अर्थात् जो होम करने के द्रव्य अग्नि में डाले जाते हैं, उनसे धुआँ और भाफ उत्पन्न होते हैं, क्योंकि अग्नि का यही स्वभाव है कि पदार्थों में प्रवेश करके उनको भिन्न–भिन्न कर देता है, फिर वे हलके होके वायु के ऊपर आकाश में चढ़ जाते हैं। उनमें जितना जल का अंश है वह भाफ कहाता है और जो शुष्क है वह पृथ्वी का भाग है, इन दोनों के योग का नाम धूम है। जब वे परमाणु मेघमण्डल में वायु के आधार से रहते हैं फिर वे परस्पर मिल के बादल होके उनसे वृष्टि[24] होती है। यज्ञ की इस प्रक्रिया के आधार पर ही आत्माराम अमृतसरी ने कहा है कि यज्ञ प्रक्रिया के चार प्रमुख उद्देश्य हैं –

1. वायुमण्डल को शुद्ध करना।
2. वैयक्तिक और सामाजिक स्वास्थ्य को बनाए रखना।
3. शारीरिक और वायुमण्डल में स्थित रोगाणुओं का नाश करना।
4. पर्यावरण को सन्तुलित कर वृष्टि के लिए पोषक वातावरण बनाना।

इसी की व्याख्या में वे आगे कहते हैं – अग्नि में डाला गया घृत और सामग्री के जलकर दो भाग हो जाते हैं – एक वहीं जलकर आस–पास के वातावरण को शुद्ध और रोगमुक्त बनाने में सहायता करता है और दूसरा भाग जो यज्ञकुण्ड में उसी समय जल नहीं पाता, वह परिवर्तित रूप होकर या अणु परमाणु रूप होकर वाष्प के साथ अन्तरिक्ष की ओर बदलों तक पहुँच जाता है और वह बादलों के निचले स्तर पर स्थिर हो जाता है, शीतल वातावरण में जमने लगता है, क्योंकि घी और पानी का गुण–धर्म सर्दी में जमना और गर्मी में पिघलना है। बादल हवा के साथ जहाँ–जहाँ जाते हैं या भ्रमण करते हैं, वहाँ–वहाँ घृत और औषधि के सत्त्व उनके साथ रहते हैं और हवा की शीतलता को पाकर वाष्पकण, जलकण के रूप में रूपान्तरित होकर वर्षा करने लगते हैं। यहाँ यज्ञाग्नि में आहुति रूप में प्रदत्त घी और सामग्री के कण वर्षा करवाने तथा जल और वायु को शुद्ध करने में सहायक होते हैं। अन्य शब्दों में यह अपने प्रभाव को जल–कणों में छोड़ते हैं, जो पर्जन्य और पर्यावरण को शुद्ध करने में योगदान देते हैं।[25] इस सम्बन्ध में अथर्ववेद कहता है – वायुगण सूर्य की किरणों से मिलकर जल को पार्थिव समुद्र से आकाश में ले जाते हैं और आकाश से पृथिवी पर छोड़ देते हैं। ये वायुगण जल के साथ चलते रहते हैं।[26]

इस प्रकार यज्ञ की आहुति से पर्यावरण शुद्ध होता है और साथ ही यज्ञ में उच्चारित विशेष मन्त्रों का प्रभाव हमारे शरीर संस्थानों पर विशेष रूप से पड़ता है। वेद मन्त्रों के उच्चारण और अर्थबोध से मनुष्य की बुद्धि निर्मल होती है। मन्त्रों के प्रभाव से होम किये गये पदार्थ, औषधियाँ अधिक प्रभावशाली हो जाती हैं। अग्नि में डाला गया भविष्य असामान्य शक्तिवान् हो जाता है। मन्त्रों के उच्चारण से उत्पन्न ध्वनि एवं अग्नि–अर्चन से उत्पन्न ऊष्मा संयुक्त रूप से भौतिक, मनोवैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक लाभ देती है। 'मा भ्राता भ्रातरं द्वेष्टि'[27] भाई, भाई से द्वेष न करे या 'संगच्छध्वं संवदध्वम्'[28] – हम साथ मिलकर चलें, एक ही वाणी बोलें आदि उदात्त विचार यज्ञ के द्वारा ही फैल सकते हैं। यज्ञ जहाँ वायुमण्डल की मैल को साफ करता है, वहीं मानव–मैल को भी समाप्त करता है। दोनों प्रक्रिया यज्ञ में साथ–साथ चलते हैं।

सन्दर्भ सूची

1. अथर्व. 12.1.12
2. उत वात पितासि न उत भ्रातोत नः सखा। स नो जीवातवे कृधि।। ऋक्. 10.186.2
3. यजु. 5.28
4. वही 6.16
5. वही 23.61
6. वही 23.62
7. अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः। ऋक्. 1.164.35
8. यज्ञो वि वस्य भुवनस्य नाभिः। अथर्व. 9.10.14
9. शत.ब्रा. 1.7.1.2
10. तैत्ति.ब्रा. 3.2.14
11. यजु. 1.3
12. ऋषि दयानन्द सरस्वती, यजु. 1.3 का भाष्य
13. वही, यजुर्वेद भाष्य, तुलनीयः ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, वेदविषयविचार
14. ऋषि दयानन्द सरस्वती, सत्यार्थ प्रकाश, तृ. समु.
15. यजु. 6.23
16. वही 1.2
17. यज्ञ महाविज्ञान (पं. वीरसेन वेदश्रमी), पृ. 44 – यज्ञ–थैरेपी (संदीप आर्य) पृ. 54 से उद्धृत
18. वेदों में पर्यावरण विज्ञान (डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डे), पृ. 68
19. वही पृ. 68
20. संस्कार भास्कर (स्वामी विद्यानन्द सरस्वती), पृ. 50

21. यजु. 1.16
22. अग्नौ प्रस्ताहुतिः सम्यगादित्यमुपतिष्ठते।
आदित्यज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः।। मनु. 3.48
23. शत.ब्रा., का. 5, अ. 3
24. ऋषि दयानन्द सरस्वती, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका वेदविषयविचार, पृ. 50
25. वेदों में पर्यावरण विज्ञान, पृ. 71–73
26. अपः समुद्राद्दिवमुद्वहन्ति दिवस्पृथिवीमभि ये सृजन्ति।
ये अद्भिरीशाना मरुत चरन्ति ते नो मुञ्चन्त्वंहसः।। अथर्व. 4.27.4
27. अथर्व. 3.30.3
28. ऋक्. 10.191.2